आरती प्रेतराज सरकार जी की

जय प्रेतराज कृपालु मेरी, अरज अब सुन लीजिए ।
मैं शरण तुम्हारी आ गयी हूँ, नाथ दर्शन दीजिए ।
मैं करुं विनती आप से अब, तुम दयामय चित धरो ।
चरणों का ले लिया आसरा, प्रभु वेग से मेरा दुःख हरो ।
सर पर मोर मुकुट कर में धनुष, गल बीच मोतियन माल है ।
जो करे दर्शन प्रेम से, सब कटत तन के जाल है ।
जब पहन बख्तर ले खड़ग, बायीं बगल मे ढाल है ।
ऐसा भयंकर रूप जिनका, देख डरपत काल है ।
अति प्रबल सेना विकट योद्धा, संग मे विकराल हैं ।
तब भूत प्रेत पिशाच बांधे, कैद करते हाल हैं ।
तब रूप धरते वीर का, करते तैयारी चलन की ।
संग में लड़ाके ज्वान जिनकी, थाह नहीं है बलन की ।
तुम सब तरह समर्थ हो, प्रभु सकल सुख के धाम हो ।
दुष्टों के मारनहार हो, भक्तों के पूरण काम हो ।
मैं हूं मती का मन्द मेरी, बुद्धि को निर्मल करो ।
अज्ञान का अन्धेर उर में, ज्ञान का दीपक धरो ।
सब मनोरथ सिद्ध करते, जो कोई सेवा करे ।
तन्दुल बूरा घृत मेवा, भेंट ले आगे धरे ।
सुयश सुन कर आपका, दुखिया तो आये दूर के ।
सब स्त्री पुरूष आकर, पड़े हैं चरण हजूर के ।
लीला है अद्‌भुत आपकी, महिमा तो अपरम्पार है ।
मैं ध्यान जिस दम धरत हूं, रच देना मंगलाचार है ।
सेवक गणेशपुरी महन्त जी, की लाज तुम्हारे हाथ है ।
करना खता सब माफ, उनकी देन हरदम साथ है ।
दरबार में आओ अभी, सरकार मैं हाजिर खड़ा ।
इन्साफ मेरा अब करो, चरणों मे आकर गिर पड़ा ।
अर्जी बमूजिब दे चुका, अब गौर इस पर कीजिये ।
तत्काल इस पर हुक्म लिख दो, फैसला कर दीजिये ।
महाराज की यह स्तुति, कोई नेम से गाया करें ।

सब सिद्ध कारज होय उनके, रोग पीड़ा सब टरे ।
सुखराम सेवक आपका, उसको नहीं बिसराइये ।
जै जै मनाऊं आपकी, बेड़े को पार लगाइये ।

विवरण

सब पर कृपा रखने वाले प्रेतराज आप मेरी भी विनती को सुन लीजिए ।
मैं आपकी शरण में आ गया हूँ आप अपना दर्शन हमें अवश्य दे दीजिए । मैं आप से विनती कर रहा हूँ, आप सबके प्रति दया रखने वाले हैं, मुझे भी आप ही के चरणों का भरोसा है, आप मेंरे दुःख को शीघ्रता से हर लीजिए ।

आप के सिर पर मोर का मुकुट है, हाथ में धनुष है तथा गले में मोतियों की माला है । जो भी आपका दर्शन प्रेम से श्रद्धा पूर्वक करता है, वह मोह-माया सभी प्रकार के बंधनों से छुटकारा प्राप्त कर लेता है । आप बख्तर पहने हुए हैं, हाथ में आपके खड़ग है एवं बायीं बगल में ढ़ाल है, आपका ऐसा भयानक रूप देखकर काल भी डर जाता है ।

आप सब तरह से समर्थ हो, सभी सुखों के दाता हो, दुष्टों का नाश करने वाले हो तथा अपने भक्तों के कार्य को पूरा करने वाले हो । मैं थोड़ी कम बुद्धि का हूँ, मेरी बुद्धि को स्वच्छ बनाओ, मेरे हृदय में जो अज्ञान रूपी अन्धकार है, उसे हटाकर ज्ञान रूपी दिया जलाओ ।

जो भी आपकी सेवा करता है, उसके सभी मनोरथ आप पूरा करते हैं । चावल शक्कर,घी एवं मेवा हम आपके आगे भेंट चढ़ाते है । आपके सुन्दर यश की गाथा सुनकर दूर-दूर से दुःखी प्राणी आये हुए हैं, सभी स्त्री पुरूष आकर आपके चरणों में पड़े हुए हैं । आपकी लीला अद्भुत है तथा आपकी महिमा अपरम्पार है । मैं आपका सदा ध्यान करता हूँ आप सदा हमारा मंगल कीजिएगा ।

अपने सेवक गणेशपुरी महन्त जी की लाज अब आप ही के हाथों में है । आपकी कृपा सदा हमारे साथ है, हमारी सभी गलतियों को क्षमा कीजिएगा । आप अपने दरबार में आइये, मैं वहाँ आपको खड़ा मिलूँगा, अब आप ही मेरा इन्साफ कीजिएगा, मैं आपके चरणों में गिरा पड़ा हूँ । मुझे जो कहना था कह दिया, अब इस पर गौर करना आपका काम है ।

तुरन्त हमें आज्ञा दीजिए या जो आप निर्णय करें, कीजिए । महाराज की यह स्तुति जो कोई भी नियम से गाता है, उसके सभी कार्य पूरे होते हैं तथा सभी दुःख दर्द भाग जाते हैं । यह सुखराम आपका सेवक है, उसको नहीं भुलाइएगा, मैं आपकी जय-जयकार करता हूँ, आप मेरे जीवन का बेड़ा पार लगा दीजिएगा ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.